Regional Rural Banks (Part - B)

प्रादेशिक ग्रामीण बैंकों की पूँजी तथा संगठन :-

इस कार्यक्रम की शुरुआत 2 अक्टूबर, 1975 ई० को देश कछ चुने हुए जिले में इस प्रकार के पाँच प्रादेशिक ग्रामीण बैंकों की स्थापना की गयी। ये पाँच बैंक उत्तर प्रदेश के गोरखपुर तथा मुरादाबाद जिले में, हरियाणा के भिवानी जिले में, राजस्थान के जयपुर जिले में तथा बंगाल के मालदा जिले में स्थापित किये गए। ये पाँच बैंक क्रमशः सिन्डीकेट बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक तथा यूनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा समर्थित थे। अध्यादेश द्वारा इन प्रादेशिक ग्रामीण बैंको की कुल हिस्सा पूँजी का 50 प्रतिशत भाग भारत सरकार द्वारा, 15 प्रतिशत भाग सम्बन्धित राज्य सरकार द्वारा तथा 35 प्रतिशत भाग सम्बन्धित व्यावसायिक बैंक द्वारा प्रदान की जायगी।

व्यवस्था 9 सदस्यों के एक संचालन मंडल द्वारा की जाती है जिनके अध्यक्ष तथा तीन अन्य सदस्यों की नियुक्ति भारत सरकार द्वारा 3 सम्बन्धित व्यावसायिक बैंकों द्वारा तथा 2 राज्य सरकार द्वारा की जाती है।

धीरे-धीरे इस बैंको का विस्तार किया जाने लगा तथा आजकल देश के प्राय:

सभी जिलो मे भी ये बैंक स्थापित किये गये है।
परिणामस्वरूप प्रादेशिक ग्रामीण बैंको की संख्या वर्तमान आजकल 196 हो गयी है जिनकी 14,519 शाखाएं देश भर मे विस्तृत है।
ग्रामीण बैंको की कार्यवाही :
इन बैंको ने अपने क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कार्य करना प्रारम्भ किया है। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ने 1977 मे 1977 मे प्रो० दन्तवाला की अध्यक्षता मे प्रादेशिक ग्रामीण बैंको की प्रगति की जाँच के लिए एक समिति की नियुक्ति की थी।
समिति ने ग्रामीण क्षेत्रो मे साख के गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनो प्रकार के प्रवाह मे सुधार की प्रशंसा की है।
समिति ने यह विचार व्यक्त किया था कि यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्राथमिक कृषि समितियो को सुदृढ आधार प्रदान करने के लिए अधिकाधिक प्रयत्न किये गये किन्तु इस सम्बन्ध मे अभी बहुत ही कम सफलता मिल पायी है।
इस दिशा मे प्रादेशिक ग्रामीण बैंको से बहुत अधिक सहायता की आशा थी।
प्रतिवेदन मे यह स्पष्ट है कि इन बैंको ने ग्रामीण क्षेत्र मे सहकारी संस्थाओं के पूरक के रूप मे महत्वपूर्ण कार्य करना प्रारम्भ किया है। आजकल इनकी संख्या 196 तथा शाखाओं की संख्या 14,519 हो गयी है

प्रादेशिक ग्रामीण एवं व्यावसायिक बैंको मे अन्तर :→
ग्रामीण बैंको की स्थापना मुख्यत: राजकीय क्षेत्र के व्यावसायिक बैंको के तत्वाधान मे की गई है।
सामान्यत: प्रत्येक राष्ट्रीयकृत बैंक ने अपने लीड जिले मे ग्रामीण बैंक की स्थापना मे अपना योगदान दिया है।
ग्रामीण बैंक ग्रामीण क्षेत्रो मे मुख्यत: व्यावसायिक बैंको की तरह कार्य करेगे। फिर भी प्रादेशिक बैंको तथा व्यावसायिक बैंको मे निम्नलिखित प्रमुख अन्तर है।

सर्वप्रथम, तो प्रादेशिक ग्रामीण बैंक का कार्य क्षेत्र किसी एक या कुछ जिले तक ही सीमित रहता है जबकि व्यावसायिक बैंक का कार्य-क्षेत्र सम्पूर्ण देश होता है।
लघु एवं सीमित किसानो तथा कृषि-श्रमिको को ही ऋण प्रदान करते है व्यावसायिक बैंक सामान्य रूप से सभी वर्ग के लोगो को कर्ज देते है।

प्रारम्भ मे कुछ समय तक ये ग्रामीण क्षेत्रो मे व्यावसायिक बैंक के पूरक बैंक के रूप मे कार्य करेगे, ऐसी आशा की जाती है कि ग्रामीण क्षेत्रो मे लघु सीमांत किसानो कृषक-मजदूरो, छोटे-छोटे कलाकारो तथा छोटी-छोटी कम्पनियों को ऋण प्रदान करने का कार्य पूर्णत: प्रादेशिक ग्रामीण बैंको को ही हस्तांतरित कर दिया जायगा। दन्तवाला समिति की राय मे भी अन्ततोगत्वा प्रादेशिक ग्रामीण बैंको धीरे-धीरे ग्रामीण क्षेत्रो मे व्यावसायिक बैंक की शाखाओ का स्थान सफलतापूर्वक ग्रहण ~~कर~~ सकोगे